मानव समाज के लिए अनिवार्य है। भगवद्गीता में इस विषय का सम्पूर्ण वर्णन है। दुर्भाग्यवश, प्रापञ्चिक वाग्चातुरी करने वाले मूढ़ गीता की आड़ में अपनी आसुरी प्रवृत्ति को ही उभारते हैं, जिससे अबोध जनता जीवन के सामान्य नियमों के यथार्थ ज्ञान से भ्रष्ट हो जाती है। प्रत्येक मनुष्य के लिए भगवान् श्रीकृष्ण की महिमा और जीव के स्वरूप का ज्ञान आवश्यक है। उसे यह बोध होना चाहिए कि जीव स्वरूपतः नित्य दास है; अतः यदि वह श्रीकृष्ण की सेवा नहीं करेगा तो नाना रूपों में त्रिगुणमयी माया की सेवा करनी पड़ेगी, जिससे जन्म-मृत्यु का चक्र बना रहेगा। यहाँ तक कि अपने को मुक्त समझनेवाला मायावादी ज्ञानी भी वास्तव में इस आवागमन से नहीं छूट पाता। अस्तु, श्रीभगवान् की महिमा और जीव के स्वरूप का यह ज्ञान परमोच्च विज्ञान है तथा इसका श्रवण करना जीव के अपने हित में है।

इस कलियुग में लोग सामान्य रूप से श्रीकृष्ण की बहिरंगा मायाशक्ति से मोहित रहते हैं और भ्रमवश समझते हैं कि भौतिक सुख-सुविधा की उन्नति से वे सुखी हो जायेंगे। वे नहीं जानते कि माया बड़ी बलवान् है, जीवमात्र उसके दुस्तर नियमों में बँधा हुआ है। जीव का सुख श्रीभगवान् के भिन्न-अंश के रूप में ही है। उसका स्वरूपधर्म यही है कि बिना विलम्ब श्रीभगवान् की सेवा के परायण हो जाय। माया के वशीभूत हुआ जीव नाना प्रकार से अपनी इन्द्रियों को तृप्त करके सुखी होने का प्रयत्न करता है; परन्तु वास्तव में इस प्रकार वह कभी सुखी नहीं हो सकता। अपनी प्राकृत इन्द्रियों को तृप्त करने के स्थान पर श्रीभगवान् की इन्द्रियों को तृप्त करना चाहिए। यही जीवन की परमोच्च सफलता है। श्रीभगवान् ऐसा आग्रहपूर्वक चाहते हैं। मानव को श्रीमद्भगवद्गीता के इस केन्द्रविन्दु को भलीभाँति समझना है। हमारा कृष्णभावनामृत आन्दोलन सम्पूर्ण विश्व को इसी केन्द्रविन्दु की शिक्षा दे रहा है। हम भगवद्गीता की आत्मा को दूषित नहीं करते, इसलिए जो कोई भगवद्गीता के अध्ययन से यथार्थ श्रेय-प्राप्ति का अभिलाषी हो, वह साक्षात् भगवान् श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन में गीता का आचरणीय ज्ञान पाने के लिए कृष्णभावनामृत आन्दोलन का आश्रय अवश्य ले। हमें आशा है कि हमारे द्वारा प्रस्तुत 'श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप' का अध्ययन करने से जनता का परम कल्याण होगा। इससे यदि एक भी मनुष्य शुद्ध भगवद्भक्त बना, तो हम अपना प्रयास सफल समझेंगे।

ए० सी० भक्तिवेदान्त स्वामी

१२ मई, १९७१
सिडनी, आस्ट्रेलिया